भूमिका

नाटकों को पढ़ना और देखना मुझे हमेशा से पसंद रहा है। दृश्य-श्रव्य काव्य होने के कारण इनके कथानक को समझना आसान हो जाता है। नाटकों से लगाव होने के कारण ही जब मुझे पीएच.डी में शोध कार्य करने का अवसर मिला तो मैंने शोध-कार्य हेतु नाट्य-विधा को ही चुना। शोध विषय हेतु मैंने अपने शोध-निर्देशक और नाटकों से जुड़े विशेषज्ञों से सुझाव लिया, जिसके पश्चात् जो शोध विषय निर्धारित हुआ वह है, 'मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता: तुलनात्मक अध्ययन'।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का अध्ययन की सुविधानुसार पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय : 'परंपरा और आधुनिकता की अवधारणा' में मैंने परंपरा और आधुनिकता की भारतीय और पाश्चात्य अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। जिसमें विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषा के माध्यम से स्पष्ट किया है। साथ ही परंपरा और आधुनिकता संबंधी अपनी शोधपरक दृष्टि भी रखी है।

शोध का द्वितीय अध्याय है 'हिंदी नाटकों में परंपरा और आधुनिकता का समवाय'। इस अध्याय में मैंने स्वातंत्र्योत्तर ग्यारह हिंदी नाटकों का चयन किया है, जिनमें परंपरा और आधुनिकता संबंधी अवयवों को ढूंढा है। स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों ने किस प्रकार ऐतिहासिक कथानक और पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की विसंगतियों को चित्रित किया है, उसे दिखाने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय है 'मोहन राकेश के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता'। मोहन राकेश द्वारा रचित तीनों नाटकों और एक अधूरा नाटक 'पैर तले की ज़मीन' जिसे उनके मित्र कमलेश्वर ने पूर्ण किया था में भी परंपरा और आधुनिकता संबंधी पड़ताल किया है। इनके नाटकों में कथानक से अधिक नाट्य पात्र विशेष हैं। अतः कथानक के साथ-साथ पात्रों के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के विभिन्न प्रभावों को दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

चतुर्थ अध्याय है 'सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता'। इस अध्याय में भी कथानक और पात्रों के माध्यम से आज के समाज और व्यक्ति विशेष के चरित्र में परंपरा और आधुनिकता के विभिन्न प्रभावों को दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

अंतिम और प्रमुख अध्याय है 'मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता: तुलनात्मक अध्ययन' इस अध्याय में मैंने मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता संबंधी तुलनात्मक अध्ययन किया है। मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटक

आधुनिक जीवन की विसंगतियों को चित्रित करने में सफल हैं। इनके नाटक आज भी प्रासंगिक हैं। किन्तु तुलनात्मक अध्ययन करते हुए मैंने दोनों नाटककारों के नाटकों में यह दिखाया है कि किन अर्थों में इनके नाट्य कथानक और पात्र परंपरा और आधुनिकता को चित्रित करने में भिन्न हो जाते हैं। दोनों ही नाटककार एक ही परिपाटी के रचनाकार होते हुए भी समाज और व्यक्ति विशेष के आंतरिक जीवन की व्याख्या करते हुए समान हैं और किस प्रकार भिन्न हैं, मैंने उन्हीं शोधपरक दृष्टि को प्रस्तुत किया है।

इस शोध-कार्य के पूर्ण होने पर मैं सर्वप्रथम अपने शोध-निर्देशक डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कुशल निर्देशन और मार्गदर्शन के परिणाम स्वरुप अपना शोध-कार्य पूर्ण कर पाया हूँ। साथ ही भविष्य के प्रति निरंतर सचेत करते रहें और जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देते रहे। मैं विभागाध्यक्ष प्रो. संजीव कुमार, विभाग प्रभारी डॉ. अमित कुमार और डॉ. अरविन्द सिंह तेजावत के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने शोध संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

जीवन के इस पड़ाव तक पहुँचना माँ और पिताजी के आशीर्वाद के बिना संभव नहीं था, अतः माता श्रीमती पवित्री देवी और पिताजी श्री मोती पासवान के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस लायक बनाया है। आगे मैं अपने प्रेरणा स्रोत चाचा डॉ. चंद्रशेखर पासवान और चाची डॉ. कल्पना कुमारी के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनका प्यार और मार्गदर्शन सदा ही मिलता रहा है। इसके साथ ही भाई सुमन और राजा को मेरा स्नेह जिन्हें हमेशा मैंन खुद के साथ सुख दुःख में साथ खड़ा पाया है।

विभाग के पूर्व शोधार्थी बड़े भाई समान डॉ. मौ. रहीश अली खान, डॉ. दीपक, डॉ. मनोज कुमार के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध-कार्य में हर संभव सहायता की तथा आवश्यक मार्गदर्शन दिया।

मित्रों में सर्वप्रथम मैं अपने प्रिय मित्र सुमित कुमार, जतिन सचदेवा, विभा मल्लिक, अभिषेक मिश्रा और अली के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने सच्चे मित्र के समान हर संभव मेरे इस शोध में सहायता की तथा साथ दिया है।

शोधार्थी मित्रों में राजकमल विभूति, राजकुमार, परवेज़, इंद्रजीत, बिशाल, अमन, अंजु, इंदु कुमारी और हिमांशु को भी धन्यावाद जो मेरे इस शोध-कार्य काल में मेरा साथ दिया।

(आलोक कुमार)